Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

मृणाल पाण्डे के साहित्य में साहित्यिक जीवन-दर्शन

Priyanka[1]* Nirupama Harshvardhan[2]

[1] Research Scholar, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

[2] Research Director, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

सार – ***मृणाल पाडे का जन्म मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में 26 फरवरी 1946 को हुआ। इनकी मां जानी-मानी उपन्यासकार एवं लेखिका शिवानी थीं। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल में पूरी की। उसके बाद इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। इन्होंने अंग्रेजी एवं संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व, शास्त्रीय संगीत तथा ललित कला की शिक्षा कारकारन (वाशिंगटन डी. सी.) से पूरी की। 21 वर्ष की उम्र में उनकी पहली कहानी हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' में छपी। तब से वो लगातार लेखन कर रही हैं। समाज सेवा में उनकी गहरी रूचि रही है। वो कुछ वर्षों तक 'सेल्फ इम्प्लायड वूमेन कमीशन' की सदस्या रही हैं। अप्रैल 2008 में इन्हें पीटीआई (PTI) की बोर्ड सदस्य बनाया गया।***

----------X----------

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार- ''मन में उठा हुआ विचार कभी समाप्त नहीं होता। बल्कि अवचेतन मन में स्थान ग्रहण कर लेता है तथा कुछ समय बाद अनुकूल परिस्थितियाँ पकर तीव्र अनुभूति रूप में सहज स्वाभाविक ढंग से फूट पड़ता है। अनुभूति को अभिव्यक्ति तक आने के लिए चार प्रक्रियाओं, मनन, स्फुरण, पोषण तथा विवेक से गुजरना पड़ता है।"[1] इसी अभिव्यक्ति का रूप साहित्य है।

साहित्यकार में संवेदनशीलता सामान्य जन से अधिक होती है। अतः उसके मानस पटल पर अन्तर्बाह्य स्थितियों का प्रभाव अधिक स्थायी एवं तीव्रता से पड़ता है। इसलिए साहित्यकार का जीवन-दर्शन सामान्यजन की अपेक्षा अधिक स्पष्ट होता है। साहित्य में जीवन दर्शन का वही स्थान है जो शरीर में आत्मा का इसलिए किसी भी साहित्य को सम्यक् रूप से समझने के लिए उसके रचयिता के जीवन-दर्शन को जान लेना आवश्यक है।

मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य का संबंध बाह्य जगत् से न मानते हुए समाज की अन्तरात्मा से माना और समाज के सुंदर कुरूप, सद्, असद आदि तत्त्वों से परिचित करवाया। जीवन और समाज का यह यथार्थ उनके साहित्य में कई रूपों में स्वस्थ और विकासोन्मुख दृष्टि से उभरा है।

यथार्थ स्थिति का अवलोकन:

यथार्थ का क्षेत्र बहुत व्यापक है। वह सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य जीवन का यथार्थ है। समाज में घटित विभिन्न घटनाएँ साहित्यकार पर प्रभाव छोड़ती हैं। जो साहित्यकार इन धारणाओं को अपनी रचना में स्थान देता है वही साहित्यकार यथार्थवादी साहित्यकार होता है। कंजमिया यथार्थवाद की एक विचारधारा मानते हैं- ''यथार्थवाद साहित्य में एक शैली नहीं बल्कि एक विचारधारा है।"[2] यथार्थवाद ऐसी साहित्यिक दृष्टि है, जिसका संबंध प्रत्यक्ष जगत से है मृणाल पांडे जी इसी प्रकार की सामाजिक चेतना से जागृत है। उनकी रचनाओं में एक ऐसा विवेकयुक्त दृष्टिकोण मिलता है जो पारस्परिक मूल्यों पर प्रश्न चिह्न लगाकर उनका युग सम्मत संस्कार करता है।

व्यक्ति यथार्थ का चित्रण करते हुए वे कहती है कि व्यक्ति का विचार, स्वभाव सभी समाज को प्रभावित करते हैं। 'चिमगादड़े' कहानी के माध्यम से उन्होंने बताया कि व्यक्ति असफलताओं, अधूरी आकांक्षाओं के बीच जी रहा है। जब ये इच्छाएँ पूरी नहीं होती तो वह छटपटाने लगता है। मारिया व सोनिया भी इसी घुटन, कुंठा, अजनबीपन जैसी समस्याओं से ग्रस्त हो जाती है। उनकी वृद्ध माँ भी अपनी बेटियों को जरूरत के समय पैसा नहीं देती, जिससे बेटियां भी उनके प्रति लापरवाह हो जाती हैं। एक क्षण को मारिया का मन हुआ कि बुढ़िया की गर्दन के पीछे की झुर्रीदार खाल चुटकी में पकड़कर

www.ignited.in

उसे ऊपर उठा ले, जैसे कुत्तों के पिल्लों को उठाया जाता है और फिर झकझोरकर मक्खन की तश्तरी में उसकी नाक रगड़ डाले- जा किसी होटल में और दो ओंस की टिकिया को हफ्ते भर चला लें।[3]

पारिवारिक यथार्थ का वर्णन करते हुए मृणाल जी परिवार को समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई मानती है। आधुनिक युग में पे्रम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विचारों में सुसमानता के कारण संयुक्त परिवार उन्हें, लुप्त होते नजर आ रहे हैं।

'कैंसर' कहानी में लेखिका इसी समस्या को उजागर करती दिखाई दी है। नगरीकरण, विचारों में असमानता के कारण बेटों में माँ-बाप के प्रति कोई लगाव नहीं।

सामाजिक यथार्थ के संबंध में मृणाल जी समाज में नारी की दीन-हीन स्थिति को उजागर करती है। राजनीति यथार्थ को अंकन करते हुए मृणाल जी ने राजनीति में हो रहे भ्रष्टाचार अन्याय धोखाधड़ी जैसी विकृतियों पर प्रकाश डाला है। 'एक स्त्री का विदागीत' कहानी संग्रह में मृणाल जी ने दर्शाया है कि धर्म के प्रति मनुष्य की गहरी आस्था होती है और धर्म ही मनुष्य में सद्भावना लाता है। मेरे बचपन में हर शनीचर मंगलवार महिला समूह बड़ी सजधज व तैयारी के साथ मंदिरों को सजाता, धूप बताशों से नवरात्रों में और भी ज्यादा रौनक होती। घर-घर कलश स्थापना होता, पाठ होता रहता। दशहरे के दिन नन्दा देवी का डाला उठता और अलमोड़ा के राजा साहब (जिनका वंश नंदी देवी को अपनी फूफी मानता रहा है) रेशमी रूमाल से आँखें पोंछते उसे विदा देते।[4] इस प्रकार मृणाल जी ने साहित्य में यथार्थ का बड़ी सजीवता से वर्णन किया है।

महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण:-

सृष्टि प्रक्रिया में जितना महत्त्व नर का है उतना ही महत्त्व नारी का भी है। भारतीय परम्परा में धार्मिक अनुष्ठान के लिए नारी के महत्त्व की आवश्यकता बताई गई है। पत्नी के बिना धार्मिक अनुष्ठान का सम्पादन असंभव ही है।[5] मृणाल जी ने भावुकता से अलग होकर नारी की यथार्थ स्थिति का मूल्यांकन किया और आगे के लिए दिशा निर्देश दिए।

'परिधि पर स्त्री' नामक निबंध-संग्रह में मृणाल जी ऐसे ही विचार प्रस्तुत कर रही है -"अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों ही क्षेत्रों में नारी संगठनों ने सामाजिक कुरीतियों साम्प्रदायिकताओं, प्रतिगामी और भ्रष्टाचार का लगातार मुखर विरोध करने में भी पुरुषों का साथ दिया है।"[6] मृणाल जी ने माता को धैर्य सहानुभूति, त्याग तथा ममता की प्रतिमूर्ति दिखाया है। 'पटरंग पुराण' उपन्यास में आभा ऐसी माँ है, जिसने हमेशा अपने बच्चों पर प्यार लुटाया है। यहाँ तक बेटों के छोड़ जाने पर भी उसकी ममता कम नहीं होती। वह अपने घर का सामान बेचकर भी बेटे को हॉस्टल पढ़ने भेजती है। "जब सुरेन्द्र भी पढ़ाई के लिए प्रयाग शहर जाने वाला था, तब सुना, आभा ने अपना रहा सहा गहना भी बेच दिया। आत्म सम्मानी छोर ठहरी दोनों माँ-बेटी। वैसे तो देवियां-बिन्दु भी तब प्रयोग में ठहरे, पर आत्मा कहने वाली हुई कि घर पर रहकर बच्चों की पढ़ाई ठीक से नहीं होगी- इसलिए हॉस्टल में डाला है, तीनों को करके।"[7] मृणाल जी ने सास बहु के आपसी पे्रम को दिखाकर यह दर्शाया है कि सास का रिश्ता जो बुराई के प्रतीक रूप में आता था, उसमें भी बहु के लिए प्रेम विद्यमान है। 'कैंसर' कहानी में सुरजी और उसकी सास के आत्मीय संबंधों का चित्रण हुआ जो वर्तमान समय में दुर्लभ है।

इस प्रकार मृणाल जी ने अपने साहित्य में नारी के अनेक सकारात्मक रूपों का वर्णन किया है।

शोषितों का साहित्य रूपी अवलोकन:-

मृणाल जी ने शोषित वर्ग का चित्रण अपने साहित्य में किया है। शोषित वर्ग में स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन उन्होंने बखूबी किया है। जो राम रचि राखा में पाण्डे जी ने यही सुझाव प्रस्तुत किया है। "इसी में भविष्य का कल्याण है मित्र। सर्वहारा वर्ग में जहाँ-जहाँ वर्ग चेतना का संचार होगा, वही शोषण वर्ग के इस दानव दल का संहार होगा।"[8] तभी समाज में छोटे बड़े का भेद समाप्त हो सकता है। तब शोषक शोषित कोई नहीं होगा और "जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम ने केवट को गले लगाया कि अपने श्री कृष्ण ने विदुर को गले लगाया।"[9] पुलिस का आतंक उसकी शोषणमूलक प्रवृत्ति, रिश्वतखोरी, शोषकों की अंध-भक्ति और समर्थन, सर्वहारा विरोधी मानसिकता, अन्यायपूर्ण कानून की शक्ति का दुरुपयोग, बर्बरता आदि ने भी पुलिस की छवि को इतना बिगाड़ दिया है कि वह शोषित वर्ग के लिए अविश्वसनीय एवं मक्कार हो गई है "पुलिस थाने में रपट लिखवाने को गए हुए या पकड़ कर लाए गए स्त्री पुरुषों के साथ अमानवीय बर्ताव के प्रकरणों में निरंतर बढोत्तरी हो रही है। पुलिस हिरासत में भी बलात्कार जैसे जघन्य अपराध के 1990 में 79 मामले दर्ज हुए तो 1991 में चैरासी।"[10] अतः मृणाल पांडे जी ने शोषितों का अपने साहित्य में चित्रण करके उन्हें शोषण से मुक्ति के उपाय भी बताए है कि यदि वे न्याय चाहते हैं तो संगठित होकर संघर्ष करने के सिवा शोषित वर्ग के पास दूसरा विकल्प नहीं।

www.ignited.in

आधुनिक परिवेश का तत्कालिक विश्लेषण:-

वर्तमान युग के आधुनिक परिवेश का तात्विक विश्लेषण भी उन्होंने अपने साहित्य में प्रचुर मात्रा में किया है। इस आधुनिकता के दौर में संबंधों में अजनबीपन की झलक आँखों में उतर आती है। 'विरुद्ध' उपन्यास की नायिका रजनी खुद फैसले लेने में विश्वास रखती लेकिन कहीं-कहीं उसमें हीन भावना भी आ जाती है। इसलिए उदय उसे कहता- "तुम तो जरूरत से ज्यादा नरमाई और विनय दिखाती हो न कभी-कभी हँसने के काबिल लगता है। गाड़ी मंगवानी है तो मांग लो, खाली नहीं होगी तो बता दूँगी। इतना डर लेकर तो तुम कभी कुछ नहीं कर सकोगी, समझी?"[11] 'उमेश' जी कहानी में माँ और बड़ी बहन के द्वारा नौकरी करने की मजबूरी के कारण छोटी बेटी एक पुरुष की वासना का शिकार हो जाती है। "खूब रात गए, मैं घर पहुँची। माँ सो रही थी। बड़ी बहन ने चुप चिटकनी खोली और फिर जाकर सो गई उसने पूछा भी नहीं कैसे लौटी।" वस्तुतः मृणाल पांडे जी को आधुनिक परिवेश के रिश्तों का यह रूप उन्हें परिवर्तित मूल्यों के प्रति गहरी चिंता प्रकट करने को मजबूर करता रहा है।

विदेशी सभ्यता का चित्रण:-

विदेश में जाकर वहाँ से लौटकर भारतीयों का हृदय कितना बदल जाता है और उस बदलाव से मूल्य स्तर पर जो पीड़ा उसे भोगनी पड़ती है। मृणाल पांडे जी के साहित्य में उसका अत्यन्त प्रभावी वर्णन मिलता है। मृणाल पांडे जी भी कुछ अर्से तक विदेश में रहकर लौटी और फिर वहाँ पर जो देखा वही उन्होंने लिखा। वहाँ रहकर वहाँ से लौटने पर किसी भारतीय का दृष्टिकोण मूल्य स्तर पर किन बातों से टकराता है, वह उन्होंने बखूबी चित्रित किया। 'कगार पर' कहानी की नायिका विदेशी है जो भारतीय युवक से विवाह करती लेकिन स्वतंत्र विचारों की होने पर वह अपने कार्यों में अपने पति विष्णु का हस्तक्षेप भी सहन नहीं करती। उसकी मर्जी को बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। "यह तो मानना पड़ेगा की मिली बच्चों के लिए एक सुलझी हुई माँ है। बचपन से उसने दोनों की आदतों को नियत कर रखा है- खाने का, सोने का, सबका एक वक्त है, चाहे घर में मेहमान हो या उसको बाहर जाना हो उसमें खलल नहीं पड़ता।"[12]

पाश्चात्य सभ्यता भारतीयों पर इस कदर छा चुकी है कि भारत में रहते हुए भी वहाँ के तौर तरीके अपनाते है 'शख्य की ओर' कहानी में औरतें भी सिगरेट, कॉफ़ी पीती है जो भारतीय संस्कृति के एकदम विपरीत है- "उमी ने सिगरेट का टुकड़ा फेंक दिया- डियर मी! देखो, कॉफ़ी याद ही नहीं रही। बगैर कॉफ़ी तो मेरा जहन सोया ही रहता है।"[13] 'दरम्यान' कहानी में भी "बाहर नशे में घूमते अमेरिकी छोकरे दो चार डॉलर के लिए किसी का भी सीना चाक कर सकते हैं। इस प्रकार मृणाल जी की रचनाओं के सभी पात्र नितांत अन्तर्मुखी होते हुए भी नियति से आबद्ध है। उनमें जीवन के अपने संस्कारों की गंध नहीं है।

सत्यभिव्यक्ति की प्रखरता:-

मृणाल जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सत्याभिव्यक्ति की है। उनकी कहानियों में पिता और कभी-कभी माता के साथ संतान, पुत्र, पुत्रवधू के द्वारा किया गया। ऐसा व्यवहार है। जो पुरानी पीढ़ी को बुरी तरह तोड़ता है। 'कैंसर' कहानी में माता-पिता के प्रति बच्चों का घटता स्नेह पूरी मार्मिकता से वर्णित हुआ है।

'दुर्घटना' कहानी में शहरी और ग्रामीण सभ्यता के बीच की टकराहट दिखाई देती है। इसी प्रकार लोककथा शिल्प में ढली बढ़ी सशक्त कहानी 'एक थी हँस-मुख दे' में परियों-चिड़ियों की बातों के माध्यम से इस बात की सत्याभिव्यक्ति प्रस्तुत हुई है कि पुरुष प्रधान समाज में सारी व्यवस्था, सारी रीति-नीतियाँ नारी के लिए ही की थी। पुरुष पर कोई बंधन नहीं था। सब बंधन स्त्री के लिए ही हैं।

पति-पत्नी में अलगाव का कारण सांस्कृतिक मूल्यों के पतन की सत्याभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में मिलती है। 'शरण्य की ओर' कहानी में पालित उमी पति-पत्नी होते हुए भी एक दूसरे से बहुत दूर हैं। उमी के एक राजदूत के साथ संबंधों को लेकर हुए झगड़े ने दोनों में दूरियाँ ला दी। "दुनिया को दिखाने के लिए समझौता भी हो गया तो क्या? अंधा भी देख सकता है कि दोनों इससे कितने असंतुष्ट हैं कैसे एक-दूसरे को बुली करते रहते हैं।"[14]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में मृणाल जी ने इस अध्याय में एक तरफ तो समाज की बाह्य व्यवस्था का चित्रण किया है, दूसरी तरफ संस्कृति की आत्मिक पक्ष भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। महिलाओं के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक रहा। शोषित का भी अपने साहित्य में यथार्थ वर्णन किया भारतीय संस्कृति के उदात्त पक्षों को भी हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1. सं. रणवीर रांग्रा, साधना और संघर्ष, पृ. 62

www.ignited.in

2. कंजमिया, हिस्ट्री ऑफ़ इंग्लिश लिट्रेचर, पृ. 15 (उद्धृत त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1957

3. मृणाल पांडे, दरम्यान, पृ. 22

7. वही, पटरंग पुराण, पृ. 121, 122

4. एक स्त्री की विदागीत, पृ. 14

5. गोपाल शर्मा, संस्कृत, लोककथा में जीवन, पृ. 68

6. मृणाल पांडे, परिधि पर स्त्री, पृ. 9

8. मृणाल पांडे, जो राम रचि राधा, पृ. 22

9. वही, पृ. 28

10. मृणाल पांडे, परिधि पर स्त्री त्रिभुज के बारे में सोचते हुए, पृ. 35

11. मृणाल पांडे, विरुद्ध, पृ. 34

12. मृणाल पांडे, यानि कि एक बात थी, पृ. 96

13. वही, दरम्यान, पृ. 48

14. मृणाल पांडे, दरम्यान, पृ. 62

Corresponding Author

Priyanka*

Research Scholar, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur